[This question paper contains 6 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1513 **E**

Unique Paper Code : 121301103

Name of the Paper : साहित्य: मृच्छकटिक एवं नैषध

Sahitya: Mṛcchakaṭikam & Naiṣadha

Name of the Course : **M.A., Sanskrit (LOCF), Examination, April-2023**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 70

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Unless otherwise required in a question answers should be written either in Sanskrit or in Hindi or in English, but the same medium should be used throughout the paper.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. अन्यथा आवश्यक न होने पर, इस प्रश्नपत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए, लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए ।

P.T.O.

1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : (7×4=28)

Explain the following :

(i) दिगीशवृन्दांशविभूतिरीशितां दिशां स कामप्रसरावरोधिनीम् ।
बभार शास्त्राणि दृशं द्वयाधिकां निजत्रिनेत्रावतरत्वबोधिकाम् ।।

अथवा (Or)

यथोह्यमानः खलु भोगभोजिना प्रसह्य वैरोचनिजस्य पत्तनम् ।
विदर्भजाया मदनस्तथा मनो नलावरुद्धं वयसैव वेशितः ।।

(ii) सिताम्बुजानां निवहस्य यश्छलाद्वभावलिश्यामलितोदरश्रियाम् ।
तमःसमच्छायकलङ्कसंकुलं कुलं सुधांशोर्बहलं वहन्बहु ।।

अथवा (Or)

कृतावरोहस्य हयादुपानहौ ततः पदे रेजतुरस्य बिभ्रती ।
तयोः प्रवालैर्वनयोस्तथाम्बुजैर्नियोद्धुकामे किमु बद्धवर्मणी ।।

(iii) निवासश्चिन्तायाः परपरिभवो वैरमपरं जुगुप्सा मित्राणां स्वजनजन-विद्वेषकरणम् ।
वन गन्तुं बुद्धिर्भवति च कलत्रात्परिभवो हृदिस्थः शोकाग्निर्न च दहति संतापयति च ।।

अथवा (Or)

भैक्ष्येणाप्यर्जयिष्यामि पुनर्न्यासप्रतिक्रियाम् ।

अनृतं नाभिधास्यामि चारित्रभ्रंशकारणम् ।।

(iv) वेगं करोति तुरगस्त्वरितं प्रयातुं प्राणव्ययान्न चरणास्तु तथा वहन्ति।

सर्वत्र यान्ति पुरुषस्य चलाः स्वभावाः खिन्नास्ततो हृदयमेव पुनर्विशन्ति।।

अथवा (Or)

प्रभवति यदि धर्मो दूषितस्यापि मेऽद्य प्रबलपुरुषवाक्यैर्भाग्यदोषात्क-
थञ्चित् ।

सुरपतिभवनस्था यत्र यत्र स्थिता वा व्यपनयतु कलङ्कं स्वभावेन
सैव ।।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए जिनमें से **एक संस्कृत** में हो : (5+5+5+7=22)

Write a short note on any **two** of the following, out of which **one** must be in **Sanskrit** :

(i) राजा नल का शास्त्रीय वैदुष्य

(Shastric knowledge of King Nala)

अथवा (Or)

दमयन्ती का पूर्वराग

(Damayanti's predilection)

(ii) नैषध का प्रथमसर्गगत प्रमोदवन

(Amusement greenwood in Naishadha's first canto)

अथवा (Or)

नल – हंस – संवाद

(Dialogue between king Nala and Swan)

(iii) मृच्छकटिक के प्रथम अंक में कालान्विति

(Unity of time in first act of Mṛcchakaṭika)

अथवा (Or)

नाटकीय संविधान में संवाहक की भूमिका

(The role of the Samvahaka in dramatic Structure of Mṛcchakaṭika)

(iv) दुर्दिन अंक का नाटकीय महत्त्व

(Dramatic Importance of the act of Durdina)

अथवा (Or)

मृच्छकटिककालीन न्यायव्यवस्था

(Justice system in the time of Mṛcchakaṭika)

3. नाटकीय कथानक के विकास में मृच्छकटिक के विदूषक की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

Explain the character of the jester in the development of the dramatic plot of Mṛcchakaṭika.

अथवा (Or)

मृच्छकटिककालीन समाजव्यवस्था का अंकन कीजिए।

Describe the Social system in the time Mṛcchakaṭika period.

4. प्रथमसर्ग के आधार पर नैषधमहाकाव्य की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

Throw light on the language and style of Naishdha on the basis of first canto.

अथवा (Or)

नैषधमहाकाव्य के प्रथमसर्ग के शास्त्रीय सन्दर्भ प्रस्तुत कीजिए।

Present thr Shastric references of the first canto of the epic Naishdha.